कुड़माली भाँवर
Kudmali Grammar

श्री पतित पावन महतो (केसरियार)
B.Sc. , B.Ed. , M.A (Kurmali)

छपईया

श्रीमति करूणामयी महतो
एम०ए० (कुड़माली)

लोक संस्कृति आखड़ा, बड़ा जमुआ, बरवाअड्डा
धनबाद (झारखण्ड)

BVP-Ref-1865
4/1/18
INF-4550-
1/9.

एकटुम,

झारखण्ड अधिविद् परिषद् माध्यमिक सिलेवसे कुड़मालीक भाषाक परीक्षा एम.आई.एल. मातृभाषा 100 नम्बअरेक हेतेक।

मायेक भाषा जानेक, बुझेक, विकास कअरेक तेहें "कुड़माली भाँवर" कुड़माली व्याकरण भाषाके गुटिआए चेष्टा करला हैं। छात्र-छात्रीक टुवेक कामे लागले आपनके बेड़ी हुब लागतेक।

नेहरे लेखक
श्री पतित पावन केसरियार
गणित शिक्षक
मंदाकिनी उच्च विद्यालय
बड़ा जमुआ

मात्र बापेक गड़ेक धुराय "कुड़माली भाँवर" समर्पित।

सूची पट

		पृष्ठ सं०
1.	कुड़माली साहित्यिक युग से भी पुराना है।	2
2.	कुड़माली भाँवर	5
3.	भाषा एवं बोली में अन्तर	5
4.	कुड़माली भाषा में बर्तनी एवं लिपि समस्या	6
5.	नामपद	8
6.	बदली नाम पद	9
7.	गुणपद	10
8.	क्रियाक गुण पद	10
9.	वेरा	11
10.	पारिख	12
11.	लेखा	13
12.	कुड़माली काव्य में अलंकार	14
13.	कुड़माली साहित्य में कहावत	17
14.	बिहाक नेवता पत्र	20
15.	कुड़मी दहंगी मअते मास एवं दिन	21

बिहाक नेउता पत्र

मानगर /मानगरी

मञ हिआ खालास नेहरे नेओतअहन चारा आषाड़ 1412 ताः 19.6.05 (बेराबार) रविवार, गाँव-माड़ु डाक तुलिन, थाना-झालदा, जिला - पुरुलिया बसगतिया श्रीकान्त डुमरियार (माहतअ) छुटु बेटा दुलाराय भुवनेश्वर माहतअ कर. संग गाँव-डाक तुलिन, थाना-झालदा, जिला-पुरुलिया बसकतिया कार्तिक माहतअक बड़अ बेटी दुलारी कुँवारी रीना माहतअक, सर सगुने बिहा हेतेक तुलिने।

माड़ुले तुलिने बिहाक छामड़ाय नेग-योग सबाई हामर घार ड़िड़ाय आअबे करिहा तहर सुमअ आसिरबादे बर कनियाय चिरअ सुखी हेवत।

आसरा करो।

नेहअरे नेवतेआ
श्रीकान्त माहतअ डुमरियार
गाँव-माड़ु
थाना-झालदा
जिला-पुरुलिया

आगबढ़आ
करुणमयी, दीनबन्धु, विवेक,
समस्त माहतअ गुस्टी

जहार बुढ़ा बाबा बुढ़ी माय

वर :
भुवनेश्वर डुमरियार (महतो)
पिता-श्रीकान्त डुमरियार
(छोटअ बेटा)
गाँव - माड़ु, डाक-तुलिन
थाना-झालदा, जिला-पुरुलिया

कनियाई :
कुँवारी रीना माहतअ
पिता-कार्तिक माहतअ
(बड़अ बेटी)
गाँव - डाक तुलिन, थाना-झालदा
जिला-पुरुलिया

बिहाक बेअरा

दना (2) आषाड़ १४१२ (ताः 17-06-06) सुकुरबार

गाते हरेद (लगन)

चारा (4) आषाड़ १४१२ (ताः 10-.06-06) बेराबार (रविवार)

सर सगुने बिहा

गोय (7) आषाड़ १४१२ (ताः 22-06-06) ह-अबार

घुर-फेर, प्रीतिभोज

तँयगेले, तहरा गेले हैं

(ग) **भविष्य काल में 'कुड़माली'**

उजाताक अखरा जाता

तँय जाबे, तहरा जावे हैं

हामि जाव, हामरा जाब्

(घ) निमितार्थ में ''कुड़माली'' क्रिया के साथ ''लाई'' प्रत्यय का योग होता है जैसे करेलाई, खाईलाई, देखेलाई,

(ङ) असामाजिका क्रिया में 'के' प्रत्यय का योग होता है जैसे करिके, देखिके, खाईके

(च) संबंध पद में ''एक'' रामेक श्यामेक

(छ) एबहुवचन में ''गिला''प्रत्यय योग कुड़माली में होता है गरुगिला हाँसगिला, घरगिला, गायगिला

(ज) कुड़माली भाषा के एकक क्रिया गुड़का, हुलका, गिरा, विछा, संड़गा

(झ) कुड़माली भाषा के नामधातु बढ़लकटाके गँहड़ालसिक गिदरटिके पिनाई देलेक

(ञ) नासिक्य माँय, काँहा, काँच, साँप

(ट) ध्वनिपरिवर्तन

कारी-काली बहु-वउ

गिरहा-ग्रन्थि लक-लोक

लाच-नृत्य

हिन्दी भाषा का ''औ''

कुड़माली में अः उसको-अकर

(ठ) टा, टाई, का योग होता है।

छवाटा गिदरटा, बेटाटा

(ड) कर्ता कारक में मगही, भोजपुरी बंगला उड़िया में विभक्ति नहीं होता है, किन्तु कुड़माली में होता है। जैसे - रामे रावनके मारलेक

(ढ) नकारात्मक में नि-निखाव, निजाव, मँय ना,

(ण) सम्मान स्नेह सम्मान के लिए हे, गो, व कि है, किगो, किव

(त) अप्रत्यक्ष -सम्मान में बहुवचन होता है - काकरा हाट जावयुन, बइकारा घारे नाईखअ

(थ) कुड़माली साहित्य को गम्भीरता से देखने पर समृद्ध साहित्य भंडार है

कुड़माली मुहवरा/कहावत

1. खाब निहित हेटि देबअ
2. उरा छुरा मधुपुरा
3. छँड़ा छिटकावास ऐड़िआ गरुक चास
4. हाथीक पेछुई कुकुर भुका
5. सुखे विराल गाछ चापे
6. विहानेक कुटुम आईल गले साँझेक कुटुम रहि गेइल
7. गुँदुर गुसा मुनसा-रिमिझिमि बरसा
8. आधाल बंखि पाँठि तीता
9. छुटुमुटु लेक डागर चौंना
10. जनजामाई भागना तिननाई आपना
11. चाकरीक भात खपरीई
12. पूरना चारेक भात बाइढे
13. वतर पावले चुटिआई ढोलंकाटे
14. लियाई निहि पावई तघंघि लेईके दोड़ई
15. उपरे धोधी पेछुई सियाड़ा
16. जाब-जावगड़ेक धुरा लेई जाव
17. हुचकाई के पूर्चाक देवा
18. साउढ़ा उजु पासे पासे गाठ
19. हुचुके बाहर भेल
20. अनाड़िक धान भाना
21. निभातारी भातार पावले बासे वापेक पारा
22. ना पारकेक नाती भातार
23. गाँववेक मोधा पर गाँवेक मधु
24. मड़ाक ऊपर कद हड़रा
25. हाथेक आलसे मोंच बाँका
26. विहा पार हइके छामड़ाई नाच
27. विहा घारे माया राजा
28. विहाक दिनेक कोहड़ा रोपा
29. पाग बाँधते परव फुराई
30. पिरीते मजिलेमन किवाहाड़ि किवाड़म
31. गंठे न भुनाई पाधाय न बाँधाई
32. चाषा चिन्हाई आड़े जालहा चिन्हाई पाड़े
33. बरेक भाई लरागुंजा
34. कन विहाके दुर आलता दभड़
35. राँधल भाते आँधार काह
36. दुधाल गायेक लाथ मिठा
37. संगा भेड़ि पकाय मरय
38. पाप काकरो बाप नाय
39. दादा ऐसन कि दिदियो पाउबे
40. हुचकाइ के देले सांघा दादाक ले भोजि ढांगा
41. टिटोए काँहु सरग टेकाय
42. बाँस बने डम काना
43. घारेक खाइके बनेक महिस रगदा
44. गाँव जावा आर गाछ चापा समान
45. चालाकेक गु तिन ठिन
46. जाइत कुड़मि अरजे चिनि खाय पानि
47. गिदर खेलाई दिन गेलि आज कहय डाइन
48. सात कोसे बानि चोदहो कोसे पानि
49. सुमेक धन शैताने खाय बाचे से आदालते जाय
50. नदि धारिक चास मिछाई करा आस
51. माछिज खोजय घाव आर मानुंसे खाजय दाव
52. सरावनेक गाछि आर मागेध बाछि

कुड़माली भाँवर

भाषा : जन साधने हामरा कहिके सुनिके, लिखिके आपन विचार के बुझा-बुझि, जाना-जानी करिअे अके भाषा कहथिक ।

भाषा – भाष् धातु से बनवाहेक-जाकर अर्थ बोलना ।

1) जन भाषा पहिल सिखिअ, मायेक भाषा
2) कहेक आर सुनेक भाषा के मौखिक भाषा
3) लिखेक आर पढ़ेक भाषा टा लिखित भाषा

"भाषाक मूल रूप टा मौखिक भाषा"

व्याकरण : जन शास्त्रे पथिई भाषाक लिखित तथा मौखिक रूपेक शुद्ध गिलान पावे अके भाँवर वा व्याकरण कहथिक ।

भाँवरेक - भिनु-भिनु विचार आहेई जेसन -

1) वर्णेक विचार   2) शब्देक विचार
3) पदेक विचार   4) वाक्येक विचार

भाषा एवं बोली में अन्तर

1) To the linguist there is no red defference between Dialect 7 language. (So Ppier)
2) There is no instrinstic defference between language & diatect. (Poei)
3) Saying that, say everest is mountain hotborn hill, a hill but between these two the dividing line cannot be drawn (Greenson)
4) It is impossible to draw exact line of demargation between either dialeet & languages though at their frontier they merge imperceptibly are into another. (L.H. Gray)

1) भाषा का क्षेत्र बोली के क्षेत्र से बड़ा होता है अर्थात् एक भाषा के अन्तर्गत अनेक बोली रहती है ।
2) भाषा केअन्तर्गत बोली है, बोली के अन्तर्गत भाषा नहीं ।
3) बोली भाषा से सृष्टि होती है अर्थात् माँ-बेटी का सम्पर्क ।
4) भाषा साहित्य, शिक्षा, शासन कार्य परिचालना किन्तु बोली लोक साहित्य एवं बोल चाल में ।
5) भाषा बोली का लिखित रूप या सामाजिक रूप
6) अन्य भाषा समझने में असमर्थ किन्तु बोली समझने में समर्थ ।

4. जमक

धन गजरत् धन सन-सन पवन
घने-घने बिजुरी ए खेला।

5. रुपक

रामचंद पुत्र लागि जितीया परब उपमा -

क) आईज हामके बेची देले भाई
धरि जेसन दहेक मछलि गो

ख) अधरे दुकुल जेसन बाँधली फुल

भ्रांतिमान

क) कन धनी गौर बरनी भानुसुता जाइछे रे
हेरो से सुबल मुखअ कमल मधु लोगी ओली धाय रे।

ख) काकर धनी पानी आने जाय
पुर्णिमाक चांद जेइसन बदन देखाय।

व्यतिरेक

किना देवेक उपमा, रम्भा, तिलकतमा, रति नहेक तुलना

व्यजस्तुति

ओ विधि बलि की गुणे
ताँञ विधि कहलि
करअ अविधि सकली

विकसित है । जिसकी अपनी लिपि नहीं है । अर्थात् भाषा विकास के लिए लिपि आवश्यक नहीं है ।

वर्तमान परिस्थिति में कुरमाली भाषा विकास के लिए देवनागरी लिपि ग्रहण योग्य है । देवनागरी लिपि विज्ञान समस्त लिपि है । भारतीय भाषाओं में समस्त ध्वनि का अंकित करने का क्षमता देवनागरी लिपि में संभव है । विभिन्न भाषा वैज्ञानिकों के मतानुसार सारा भारतवर्ष में एक लिपि का उपयोग आवश्यक है ।

रोमन लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक माना जाता है । फिर भी उच्चारण दोष मुक्त नहीं है । But and Put. का एक उच्चारण नहीं होता है । Psychology में P का अवस्थान Hour शब्द का उच्चारण स्पष्ट नहीं है ।

इसलिए राष्ट्रीय एकता के लिए जिस प्रकार राष्ट्रभाषा का प्रयोजन है उसी प्रकार लिपि का एकरूपता का प्रयोजन है । भारतवर्ष में 14 (चौदह) भाषा स्वीकृत है, जिसमें 12 (बारह) का लिपि है । आर्य परिवार का भाषा द्रविड़ गोष्ठी का भाषा में अनेक अन्तर है, उसी प्रकार उत्तर भारत की लिपि, दक्षिण भारत की लिपि में भिन्नता है ।

उपरोक्त आलोचना से दृढ़ भाव से कहा जा सकता है । कुड़माली भाषा में देवनागरी लिपि ग्रहण असंगत नहीं होगा और इसके लिए आपन भाषा आपन लिपि मोह छोड़ना पड़ेगा ।

कुड़माली काव्य में अलंकार

❏ पी.पी. केसरिआर

अलंकार कथाटिक साधारण माने हेलेक भूषण, कुड़मालिई गहना कहत। जेसन नारीक गाते गहना साजेइक तैंसन साहित्येक लिखेक शब्दअ गिलाके साजाअल जाइक, कांहु-कांहु शब्दअ गुछाक माने भावे बुझाउले, पड़हइते सुनते बेस लागेहक।

साहित्येक गइद - पइद् केहनि लिखेक साजाअल दंगेक अलंकार कहेलाइ पारा जाइक। कुड़माली साहित्ये बिरवित्थान लेखक पुंथि खंजि देखले बेजांइ गहना आहेक। जे कनह भाषाक अलंकार बखरा दुई भागे बांटा करल आहेक। शब्दालंकार आर अरथालंकार।

हामरा देशेक विकासशील भाषाक लेखा-जोखा खदि नदि करलें देखा जाक भिनु-भिनु भाआविदगन अलंकार बारेक मत जेसन करलाहात। केउ-केउ कहत अलंकार निहिले काइबअ रचना निहितेक। पुरना जुगेक पुराण सभे निखईंतारा निअलंकारे काइबअके राँढ़ी कहलायिक, भामह, दंडि, उद्‌भट, रदरट, मानगार पंडित निखाक मते हामरा जेसन परधन परसाधन करिके साजि-गुजि करिअ असने काव्येके शब्देक मालाक गुछअल करिके गाँयले काव्य सुनदर लागेइक। बांगलाक कवि जयदेव बिना तापेक आइग कहलाहे।

कवि भामट कवि निखाक मत बिना आलंकारेअ काव्य लिखा जाइक। काहे न काव्य कविक मनेक उद्‌वेग ले बाहराइक। मनेक भाव प्रकाश करेलाइ जदि शब्दअ तागड़ाअल हेउइक तअ भाव परवाहेक ताल सुड़र सघर काहातेइक आर एक बार तार काँटतो चाँडे जेशन जड़इक निहि तेसन काव्य लेखेक गति यामि जाइक। एहे अब सयाइ अलंकार साहित्येक केबल मान धरि राखइक।

सुनल कथा वेद व्यास जखन महाभारत लिखल रहइ तखन श्रीगणेश देवताक टुएक मने अहंकार हेरहइ तेंई शरतअ राखल रहे जे हामर कलम बनदअ निहितेक . गे आनि वेदव्यास कहलेंइक तँइ कनह शब्द ना बुझिके लिखे नि पारबेहे। आर जखन व्यास देबेक कनह काम पड़ तेइक तखन एसन शब्दअ लिखेलाइ कहेतेलिस जेंटा गणेशेक मगजे निबुझ। पुरन जुगले आधुनिक युगेक काव्य धाराक भिनु-भिनु खेजाक जेशन छायाबाद, परगतिवाद, प्रयोग आदि कबिक संगे एकमत हेइके कहेलाइ पाराक अलंकार काव्य रचनाँई सहायक कबीर, तुलसी, धरमवीर प्रसाद आदि कविक रचनाइ सावलीन भाव, बेनजनाँइ अलंकारिक बिर-विथान देखल जाइक।

ज) एक खाला माछ धरलेक

झ) छितराइल महुआ गिला कुधि करे ।

ञ) खेरिआने धान डिगाँई दिहिन

ट) इबछर मड़ुआ जन्हाईर निहि हेलेक

ठ) धरने धानं मरि गेलेक ।

ड) ऐई बेड़ी दलिदरा हेकेई

ढ) गरुटा कढ़ि हेकेई ।

बदली नाम पद (Pronoun)

नाम पदेक बदले जेई पद गिलाके कहथिक कुड़मालि भाँवरे अहे शब्दअ गिलिके बदली नाम पद कहथिक ।

(1) सभे, सभ

(2) जेई, जाखरा, जेगिला

(3) एँई, एखरा, ई गिला

(4) अेई, अखरा, ऊ, उगिला

(5) कअन, किनाआ, कोखरा काँहा कनठिन

(6) केऊ, कनह, कोईअ

(7) कनठिने, एहेठिने

(8) कखन, जखन, काँहा

(9) कतेक, जतेक, रिचेक, टुएक, एतेक

(10) एथि, अथि - तथि

(11) एहेवाटे - बहेबाटे - हावबाटे

(12) अमुक - फानला ।

(क) सभे गेले भालअ हेतेक ।

(ख) अखरा सँपड़लाहात ।

(ग) कने कहलाक इकथाटा मिछा हेकेई ।

(घ) कनठिने सूरजाही लागाई ।

(ङ) फानला ससुर घार गेलेअ ।

(च) अमुके तहराके खजेहिलेई ।

(छ) रिचेक झअर आनि दे ।

(ज) काँहा गेरहस कखन आवबे ।

कारक/पारिक (कुड़माली) Case

कर्त्ता	ने, ०	ऐ, ई	0	0	0	0
कर्म	को, 0	के, 0	के 0	के	के को	के, कै को
करण	से द्वारा	ले द्वारा	से सई	सो से सन्ति	से	से से 3
सम्प्रदान	को के लिए	ला हे लाही	के लागिन लाईले,	ले खातिर लागि	ले खातिर	लागि लेहे लो
अपादान	से	ले	ले से	से से	सो से	से सा
सम्बन्ध	का, के	एक क कर	कर केर	केरे कर करा	केर कोई	कर के
सम्बोधन	हे हो अवे	ए ऐगो एहे एहो	ए हो	हे रे	हे ही हो	हे ही

कारक

कर्त्ता कारक : प्रथम 1 ऐ (विभक्ति)

क) मदने दहिदे, ख) नागरे बाजाय बाँसी हामे नाही

कर्म कारक : द्वितीया विभक्ति

क) हेरी पीन पयोधरे, विपदे राखे मोरे

करण कारक : तृतीया विभक्ति

क) लाज की छुले जाई जले

ख) कि बाँधने बाँधि हिया

ग) वाणे मारे देली

सम्प्रदान : चतुर्थ विभक्ति

क) ढाकाइते, आनिते कि गुण सुनाते

पंचमी विभक्ति :

क) गगने जल बअरिसे

कुड़माली षष्ठी विभक्ति में 'एर' 'क' होता है।

क) सावनेर पवनेर सने

ख) कोकिलेर स्वरे

ग) जलदेर डाके

अधिकरण : सप्तमी विभक्ति

सने-संग में, समाजे समाज में,

(3) हिंदगे हुँदगे कँदे जँदे तँदे

(4) एसन, जेसन, तेसन, ईलेखे

(5) एतेक, अतेक, एतना, अतना, दमें

(6) आर मेनेक, मेनतुक, फेइर

(7) नेंही - ठेपअ धकड़, चाँदि

(8) माताली, घाघाली, मकमकानी, माइगअ, बौंपगोअ, दूरमाईंरि बाह-बाह, झर-झर।

वेरा (Tense)

कुड़माली भाषाय क्रिया जन पहरे खेपईक अहे पहर के बेरा कहथिक।

बेरा के साधारणतः तिन बाखरा हेवेक :-

(1) चलती वेरा : (Present Tense)

(क)	उ जाईसाहे	अखरा जाहात
(ख)	तञ जाहास	तहरा जाइदा
(ग)	हामि जाई हे	हामरा जाईहे

(2) बितिवेरा (Past Tense)

क्रियाक दसा विति पहर बुझाईक अहे पहर के बिति बेरा कहथिक।

(क)	उ गेलाक	अखरा गेला
(ख)	तञ गेले	तहरा गेलेहे
(ग)	हौमि गेलिअ	हाम रा गेलिअ

(3) आउति वेरा (Future Tense)

क्रियाक दसा आउति पहर बुझाईक अहे पहर के आउति बेरा कहथिक।

(क)	उ जाताक	अखरा जाता
(ख)	तञ जाबे	तहरा जाबे हैं
(ग)	हामि जाब	हामरा जाब

गुणपद (Adjective)

जन शब्दे नामपद, क्रियापद आर गुणपदेक गुण बुझाईक कुड़मालि भाँवरे उहे शब्दअ गिलिके गुणपद कहथिक ।

(1) तँदड़ जेनी, डिगर गिदर, कड़िया मुनिस

(2) पेंका बुढ़ा, लेदागाछ, झाँक झाँपड़ा ।

(3) एक कुँचड़िधान, दु डुभा लेटअ, तिनसलि ।

(4) तिन गिदरेक माई, पहिल बेटा, सँझली जेठी

(5) ताँतेक ठेंठि, माटिक ठिलिया, सन सुतरी पुआल दड़ी

(6) एहेठिन हाव छुँदे, अकर पेछुई

(7) हुबेक दिन, आफर उभा बाहांग, गोबर कुढ़ा कुढ़ी

(8) मडुआ गुँड़िक लेटअ, बिरिह बड़ी

(9) डेडि, दबड़, आढ़हाईया

(10) गुज गुजा आँधार, फिंगफूटा इजतिया राईत थुलुर थुपा बुढ़ा ।

(11) चाँडे - चाँडे डेग दिहि, मित्रा ठुनकले गेलि

(12) सिझल, राँघल, सड़गल

(क) पेंकाबुढ़ा दुपहरा खाईसा है ।

(ख) कढ़िआ मुनिस पाईलह कामटा पूरबेक न निही

(ग) लेदाबड़ गाछेक तरे बेटी छोवआ गिला गाल मारहत ।

(घ) बाँउड़ी दिने दुकुंचड़ी धान बाँधलिअ

(ङ) रोहिन दिने तिनसली धानेक आफर गड़ि देलिहा

(च) सैंझली जेठी ताँतेक ठेटि पिंघलाही

(छ) पुँआल दड़िक झड़ि बुनईसाहे ।

(ज) फिंगफुटा इंजतिआ राते गरामथाने विचारेक जुड़अही ।

क्रियाक गुणपद (Adverb)

(1) कतिखुन, रतिखुन, एवेरी, हाववेरी

(2) इठिन, उठिन, एहेठिन

लेखा (Number)

कुड़माली भाखिई लेखा बुझाईक टुल भिनु-भिनु आहेक ।

1) एक लेखा : मत्र, तत्र, अत्र

2) साँगि लेखा : हामरा तहरा, अखरा ऐखरा एकले खाले साँगि लेखा बनावेक धरन

- क) निखा शब्दअ जुड़िके - काँटना निखा बहाल खेते जाबड़ देथिक।
- ख) नि साड़ा जुड़िके : हामे - हामनी
  - 1) हामनी हीड़ खेत धान काटे जाहें
  - 2) तहरानि नाई गेले हैं कामें
- ग) रा शब्दअ जोड़िके :
  - 1) तरा सेदिन किना कहलिओ
  - 2) हामरा टुसु मेला परब देखेलाई जाबोई
- घ) गिला साड़ा जोड़िके :
  - 1) बाछुर गिला पिदकहत् ।
  - 2) गिदर गिला खेलहत ।
  - 3) कड़रु गिला रेंकहर ।
- ङ) गिलान साड़ा जोड़िके : पाँठा, भेड़ा, बरद, साँड़ खाँखड़ा गिलान धरलाअथिक ।
- च) मेढी शब्देक : गिलि साड़ा जोड़िके
  - क) फानलाक बेटीगिलि - रही गेली ।
  - ख) गायगिलि खोलिहीन
- छ) गाय महिष गिलिन अनुकरिले छागेर गिलिन ठऊका बेचला ।

---

7. साहित्य रचना श्रेष्ठ होने पर बोली भाषा में स्वीकृत प्रायः जैसा ब्रजबोली-अर्थात् ब्रजभाषा।

8. राजनैतिक दबाव एवं प्रभाव में बोली भाषा बनता है। जैसे - हिन्दी का खड़ी बोली - 'आज राष्ट्रभाषा''

नाम पद (Noun)

जन शब्दअ लकेक गाँवेक खायेक पीयेक जायूत नाम बुझाईक अके नामपद कहथिक।

संज्ञाक भेद :

1) व्यक्तिवाचक संज्ञा - हावु, भखु, नंदा, कुदरा, लेदिया, नुनिया।
2) जातिवाचक संज्ञा - हाँस, खुखड़ी, सियार, गरु, महिस।
3) समूह वाचक संज्ञा - कुधि, डिंग
4) द्रव्यवाचक संज्ञा - जन्हाईर, मडुआ, गुंदली, कदअ, धान।
5) भाववाचक - दलिदर, काडराहा, गिजड़, कढ़ि, सुख-दुख।

नामपद चिन्हे

(क) आमटाँडे छाता मेला लागई
(ख) एकादशी तिथिई करम डाली गाड़ेक
(ग) भादर मासे जनाई लेट गद-गद
(घ) भुखेक दिने गुँदली/मडुआ घाटा भात
(ङ) डेम, बाँधे टुसु मेला लागई।
(च) ''राँगाहाड़ी'' कुदरा देवता हेकेई।
(छ) सभे गाँवे गेराम पूजा हेवईक।

क) हाबु आइड़ कदराइसाहै
ख) भखु गडअला है।
ग) नंदा घार गेलाक
घ) आइज कुदराथाने पूजा हेतेक
ङ) नुनिआ महुआ बिछे गेलाही
च) घारे हाँस मासेक बेसाती
छ) खुखड़ीटिई डिम देहेक

उपरेक आलोचनाइ एहे सिद्धान तअ आवबे परिए अलंकार काबबेक सुनदरअता बढ़ाउएक। शब्दअ सुनेक छन्देक, भावेक आधारे भाग करेलाई पारा जाइक। कुड़माली साहित्येक भांडारे अलंकारेक खाजाना आहेइक । इबार अलंकारे टु एकटि सब्दअ देखल जाइक -

उपरेक आलोचनाइ एहे सिद्धान तअ आवबे परिए अलंकार काबवेक सुनदरअता बढ़ाउएक। शब्दअ सुनेक छन्देक, भावेक आधारे भाग करेलाई पारा जाइक। कुरमाली साहित्येक भांडारे अलंकारेक खाजाना आहेइक । इबार अलंकारे टु एकटि शब्दअ देखल जाइक -

1. छेकानुप्रास

क) करिल बाँसेकेरि डालिया
डालिया नये-नये जायरे

ख) जाकर चुन, ताकर पुन

ग) गुरु-गुरु रहि गेल, चेला चिनि बनि गेल

घ) खेतिहर गेइल धार, धाँए-बाँए हार

2. वृत्तानुप्रास

क) तोरे आंगेनाय हामे नाचब मलहरिया।
तोरे आँगेनाय हामे नाचब मलहरिया।

ख) टुसु-टुसु करि हामरा, टुसु नाइख घारे गो
कने टुसुके लेइ गेलेक, फूलेक माला देईं गो।

3. बीपसा

क) हिदा-दिहा करम राजा दिहा आशीष गो
मोर भइया बाड़होतोउ लाखअ बरिष गो।

ख) भिजाई देवो भिजाई देवो साड़िया संदेशा
सुखाइ लेबे उजे पवने बासाते सुखाइ लेबो।

कुड़माली भाषा में बर्तनी एवं लिपि समस्या

प्रत्येक भाषा में किसी न किसी रूप में लिखने का समस्या देखने को मिलता है। संस्कृत भाषा में वाहिनी व्यवहरित, कैलाश, कैलास, उषा, उसा, अन्तराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी में जाजमेट (Judgement, Cantre Canter, Banian, Baniyan) विभिन्न शब्द विभिन्न स्थान से भिन्न उच्चारण होता है, जिसके फलस्वरूप शुद्ध शब्द रूप लिखना मुश्किल हो जाता है। बांग्ला भाषा में दो बल है एक 'ब' का उच्चारण नहीं होता है जैसे आश्विन, आह्वान सरसावती स्वप्न।

हिन्दी भाषा में उच्चारण होने पर भी लिखा नहीं जाता है। जैसे धनबाद, धानबाद, मंडल, मण्डल अंग्रेजी She, See, Shree, Sri एक उच्चारण किन्तु अर्थ भिन्न होता है।

कुड़माली भाषा में भी कोई लिपि नहीं है। देवनागरी एवं बांग्ला लिपि में लिखा जाता है। इसलिए शुद्ध शब्द नहीं मिलता है। कुड़माली, कुर्माली, कुरमाली, माहात, माहत, महतो, वैयाकरण, व्याकरण, वेयाकरण, मय, मई, मँई।

भाषा समृद्धि के साथ-साथ शब्द का लेखन धीरे-धीरे सहज, सरल किया जाता है। जैसे कलिकाता, कोलकाता Calcutta, Kolkata संयुक्त अक्षर सरल भावे लिखा जा रहा है। वर्धमान वर्द्धमान, वरधमान, Burdwan - Bardhman, विद्यालय - विद्‌यालय।

जनजाति क्षेत्रिय भाषा विभाग केवल राँची विश्व विद्यालय में पठन होता है। जहाँ राज्य के विभिन्न प्रान्त का छात्र/छात्री पढ़ने आता है और सबसे पहले लिपि समस्या में पड़ता है। हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी केवल अपनी लिपि में पढ़ाई होती है। शेष भाषाओं का देवनागरी लिपि में पठन होता है। फलस्वरूप विभिन्न प्रान्त से आने वाले छात्र/छात्री का लिपि समस्या से सम्मुखी होना पड़ता है। जैसे साँवताली भाषा-बांग्ला लिपि एवं साँवतान परगना के साँवताल हिन्दी लिपि। लिपि भिन्न होने के कारण भाषा का एकरूपता नहीं हो पाता है।

इसी तरह कुड़माली भाषा आज बांग्ला, देवनागरी, उड़िया लिपि में लिखने के लिए बाध्य होता है। प्रश्न उठता है, प्रत्येक भाषा का अपना लिपि व्यवहार करने पर भाषा का विकास एक शताब्दी पीछे चल जाएगा। साथ ही नयी लिपि में छापाखाना, पुस्तक समस्या अर्थात् भाषा का विकास की गति रूक जाएगी। विश्व में अनेक भाषा

"कुड़माली साहित्य में कहावत"

❑ पी.पी. केसरियार
मंदाकिनी उच्च विद्यालय, बड़ा जमुआ

आदिम समाज का परम्परा की कानून व्यवस्था समाज व्यवस्था, राजनीति को जानने के लिए कहावते या लोकोक्ति पथ-प्रदर्शक है। साम्राज्य नष्ट होता है। किन्तु प्रवाद नष्ट नहीं होता है। दीर्घकाल तक अभिज्ञता, सार्विक सभ्यता प्रवाद वाक्य में प्रस्फुटित होता है। 'रामराज्य' बोलने से लोग एक वाक्य में समग्र व्यवस्था में आँच आता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य जातक कथा, वैदिक साहित्य में कहावत का उल्लेख मिलता है। प्रवाद वाक्य का उत्पत्ति बीच प्रवाद वाक्यों का अपना वैशिष्ट है जो मनुष्य के मन को आकृष्ट करते हैं। प्रवाद लोक सम्पत्ति है जिसमें सहज सरल बोधगम्य होता है।

कृषि वृत्ति (1) जखने 'रस', तखने चस।
(2) चासा चिन्हाई आइड़े - ताँती चिन्हाई
(3) चासाक दिने सात ताल बहई

नीति ज्ञान शिक्षा - (1) उलिक संगे धूलि जाय भूला भूली।

गूढ़ अर्थ - (1) हाथिक सेछु कुक्कुर भूँके।
(2) सनला गाछे टांगाई मर।
(3) लियाई न्हीं पावई धोधी लेइकै दौड़य।

जातिय सरित्र - (1) ढेर काठे महुल सिझे बहुत कथाई कुर्मी बुझे
(2) सुड़ी, तेली, पोद्दार, कलिते उद्धार।

धर्म संस्कार - (1) मायेक करम मायेक धरम।
(2) नाढ़ाई खोजई इंद परब।

चिरअ सत्य - (1) खूँटाक बले कड़रु नाचे।

समाज रीति - (1) खापड़ा धारेक चाली, ससुर घारेक साली
(2) बिहानेक कुटुम आइल गैल,
साँझेक कुटुम रहि गैल
(3) तअरेक माटी ऊपर कर, जमी देखी भातार कर।

लोकगीत, लोककथा, मुहावश, पहेलियाँ. कहानी. नाटक जिसमें आदिवासी का जीवन पद्धति. प्रकृति प्रेम संस्कार संस्कृति का अमूल्य खजाना मिलता है और कुड़माली भाषा संपूर्ण प्रथम सारी भाषा में रहने का क्षमता है।

(द) कुड़माली भाषा का अपना संगीत धारा है, जैसे - उढाआ, ढपं, जावा, करम, सहराई, झुपाउ, बिहा, नटुआ, झुमर, टुसु, अन्य भाषा में नहीं है।

(ध) विलक्ष्णात्म दृष्टि से देखने पर प्रवाद, वाक्यं, पहेलिया, मुहावरा में कुड़मी जाति का जीविका भितिक, सामाजिक, धार्मिक, रीति व्यवहार का सम्पूर्ण चित्त मिलता है।

1. **धर्मो**-कल कुड़मी कड़ा वेद शास्त्र छाड़ा। जागतिक सत्य एक पुतं न चुलहाई मुत ॥
2. ढंग न चलन चंदर गतर।
3. आईग कांहु अदा, राजा काहु दादा ॥
4. **सामाजिक रीति**-हाड़ि किनयिन ठंकिके केनियाई करथिन देखिके ॥
5. पहिल कड़ि अकर वादे छकड़ि ॥
6. वृतिगत-चासा चिन्हाई आड़े, ताँती चिन्हाई पाड़े।
   दामड़ा गरुकहार, डँगुआ जेनिक घार।
   जहत नेही त महत नेही।
7. **शिक्षा**-गत-छटअ देखि आड़ाई,
   बड़ देखि डाड़ाई।
   मकरे पानी टिकरे धान।
   अकालेवर ताँहे बेटी बिहायकर
8. **गुढ़ार्थ**-कड़ही सुतय अड़ही गड़ही।
   सियान सुतय भरसी भरी ॥
   जाँचलें जामाई पिठा नीहि खाय।
   भिनसरिया ढेकी चाटे जाय ॥
9. **जातिगत**-कुड़मिक पेचुवाटे बुईध, देरकांठे महुआ सिंझे देइर बाते कुड़मी बूझे ॥
   उपरोक्त आलोचना से ज्ञात होता है कि कुड़माली भाषा एक स्वतंत्र भाषा साहित्य युग से पुरातन एवं भारतीय भाषा वर्ग में रखा जा सकता है।
   समय सापेक्ष किन्तु शताधिक लेखक कवियों के साधना द्वारा भारतीय भाषा दरबार में आसन लाभ करेगी। राँची विश्वविद्यालय में इस भाषा की पठन-पाठन एम.ए. में होती है।

53. खाब्र निहित हेंटि टबअ
54. उरा छुरा मधुपुरा
55. छँड़ा छिटकावास ऐड़िआ गरुक चास
56. हाथीक पेछुई कुकुर भुका
57. सुखे विराल गाछे चापे
58. विहानेक कुटुम आईल गले सांझक कुटुम रहि गेइल
59. गुँदुर गेसा मुनसा-रिमिझिमि बरसा
60. आधाल बंखि पोंटि तीता
61. छुटमुटु लेक डागर चौंना
62. जनजामाई भागना तिननाई आपना
63. चाकरीक भात खपरीई
64. पूरना चारेक भात बाइढे
65. वतर पावले चुटिआई ढोलकाटे
66. लियाई निहि पावई तधंघि लेईके दोड़ई
67. उपरे धोघी पेछुई सियाड़ा
68. जाव-जावगड़ेक धुरा लेई जाव
69. हुचकाई के पूचकि देवा
70. साउढ़ा उजु पासे पासे गाठ
71. हुचुके बाहर भेल
72. अनाड़िक धान भाना
73. निभातारी भातार पावलेबासे वापेक पारा
74. ना पारकेक नाती भातार
75. गाँववेक मोधा पर गाँवेक मधु
76. मड़ाक ऊपर कद हड़रा
77. हाथेक आलसे मोंच बाँका
78. विहा पार हइके छामड़ाई नाच्च
79. विहा घारे माया राजा
80. विहा घारे माया राजा
81. विहाक दिनेक कोहड़ा रोपा
82. पाग बाँधते परव फुराई
83. पिरीते मजिलेमन किवाहाड़ि किवाड़म
84. गंठे न भुनाई पाघाय न बाँधाई
85. चाषा चिन्हाई आड़े जालहा चिन्हाई पाड़े
86. बरेक भाई लरार्गुजा
87. कन विहाके दुड़ आलता दभड़
88. राँधल भाते आँधार काहे
89. दुधाल गायेक लाथ मिठा
90. संगा भेड़ि पकाय मरय
91. पाप काकरो बाप नाय
92. दादा ऐसन कि दिदियो पाउबे
93. हुचकाइ के देले सांघा दादाक ले भोजि ढांगा
94. टिटोए काँहु सरग टेकाय
95. बाँस बने डम काना
96. घारेक खाइके बनेक महिस रगदा
97. गाँव जावा आर गाछ चापा समान
98. चालाकेक गु तिन ठिन
99. जाइत कुड़मि अरजे चिनि खाय पानि
100. गिदर खेलाई दिन गेलि आज कहय डाइन
101. सात कोसे बानि चोदहो कोसे पानि
102. सुमेक धन शैताने खाय बाचे से आदालते जाय
103. नदि धारिक चास मिछाई करा आस
104. माछिञ खोजय घाव आर मानुसे खाजय दाव
105. सरावनेक गाछि आर मागेघ बाछि

कुड़माली भाषा साहित्य युग से भी पुराना है

कुड़माली भाषा कुड़मी जाति के नामानुसार हुआ है। कुरम शब्द के साथ ''आली'' प्रत्यय के योग से कुरमाली जैसे बंगाली, नेपाली गढ़वाली।

डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी के मतानुसार कुटूमवीत शब्द से कुड़मी शब्द की उत्पत्ति। कुड़मी लेखक एवं इतिहासकार के अनुसार करम शब्द से कुरमी कुड़मी का उत्पति। 'कु' शब्द का अर्थ पृथ्वी और 'रमी' शब्द का अर्थ रमम करना अर्थात् हल चलना या कृपि कार्य करना।

एच.एच रिजले मानभूम के कुड़मी जाति द्रविड़ जाति के अन्तर्गत एवं कुड़माली भाषा द्रविड़ भाषा के परिवार में है। डॉ० ग्रियसर्न सर्वप्रथम कुड़मी जाति को द्रविड़ जाति के अन्तर्गत माना है, कुड़माली भाषा संबंध, उनका मत विचित्र बुभाग का विचित्र निवासी का भाषा है। डॉ० सम्प्रति आर्जानी कुड़माली भाषा को द्रविड़ भाषा के परिवार में मानता है। डॉ० नन्दकिशोर कुड़माली को स्वतंत्र भाषा मानते हैं। न की मगही भाषा का अपभ्रंस है।

डॉ० धीरेन सह झारखण्ड क्षेत्रीय भाषा झारखण्ड के समीमाबद्ध जो साहित्य युग से पुरातन स्वयं सम्पूर्ण भाषा के उत्पत्ति संबंध में तक वितर्क जो भी हो कुड़माली भाषा के निजस्व विशेषता नवीन भारतीय आर्यभाषा तथा स्वीकृति भाषा के पंक्ति में रखा जा सकता है।

1. बंगला, पंजाबी, गुजराती, राजस्थानी भाषा में स्थान वाचक सान्निध्य मिलता है किन्तु कुड़माली भाषा में कुड़मी नाम का कोई स्थान नहीं है अर्थात् कुड़मी जातिवाचक शब्द है।

2. शब्द भुंडार का समृद्धि प्रदाय, प्रकृति, ध्वनि वैशिष्ट में भोजपुरी, मगही, मैथिली का समगोत्रिय मालूम पड़ता है। किन्तु कुड़माली भाषा प्रथम सारी भाषा के स्थान पर अधिकार क्षमता है।

3. व्याकरण गत विशेषता

(क) वर्तमान काल

उजाईसाहे अखरा जाहात

तँय जाहास तहरा जाईहा

(ख) अंतीतकाल

उगेलाक अखरा गेला

कुड़मी दँहगीमते

(1) अना मास (पहिल) मधुमास	Spring	बसन्तकाल
(2) दना मास (दसरा) निरन मास	Summer	ग्रीष्मकाल
(3) टेना मास (तसरा) रपा मास	Rainy Seasion	वर्षाकाल
(4) चारा मास (चौथा) भादर मास	Autuman	शरतकाल
(5) माचा मास (पाँचक) काटनिमास	Harvest	हेमन्त
(6) झेईक मास (छठा) जाड़मास	Winter	शीतकाल

दिन (Day)

(1) चाँदबार	Monday	सोमवार
(2) खरनबार	Tuesday	मंगलवार
(3) ह-अबार	Wednesday	बुधवार
(4) डिनिबार	Thursday	बृहस्पतिवार
(5) सुकुरबार	Friday	शुक्रवार
(6) भांगाबार	Saturday	शनिवार
(7) बेराबार	Sunday	रविवार

लेखक का अन्य कृतियाँ

1.	बिद्वान	(कुड़माली कविता)
2.	दिवाकर	(कुड़माली काव्य)
3.	कुड़मालियारि	(गद्धय साहित्य)
4.	कुड़मालि के कवि एवं काव्य	(अप्रकाशित)
5.	कुड़माली भाँवर	**(Grammar)**
6.	कुड़माली कुलेक कुल तिलक	

Printed by : **Kishan Printing Press,** ***Kalyanpu, Fufwadih (Barwadda)***